शेख़ फ़रीद - सबद २१

फरीदा खाकु न निंदीऐ खाकू जेडु न कोइ ॥

सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३७८

फरीदा खाकु न निंदीऐ खाकू जेडु न कोइ ॥
जीवदिआ पैरा तलै मुइआ उपरि होइ ॥१७॥

सार: हर चीज़, चाहे वह कितनी भी छोटी या साधारण, महत्वपूर्ण या तुच्छ, शुद्ध या अशुद्ध क्यों न हो, ब्रह्मांड के संतुलन में एक भूमिका निभाती है। जो तुच्छ प्रतीत होता है उसके प्रति तिरस्कार भाव व्यक्ति की अज्ञानता, अहंकार और अस्तित्व की गहन एकता से अलगाव को दर्शाता है। जो चीज़ तुच्छ प्रतीत हो, उसमें गहरा महत्त्व छिपा हो सकता है। यह गहन चिंतन अहंकार को समाप्त करने का आह्वान है जो हमें दूसरों को कठोरता से आंकने की प्रवृत्ति की ओर ले जा सकता है।

फरीदा खाकु न निंदीऐ खाकू जेडु न कोइ ॥
फ़रीद कहते हैं कि मिट्टी को तुच्छ समझ इसकी निंदा न करें क्योंकि इसके समान कुछ भी मूल्यवान नहीं है। यह रचना के हर तत्व के महत्व का प्रतिनिधित्व करती है।

जीवदिआ पैरा तलै मुइआ उपरि होइ ॥१७॥
जब हम जीवित होते हैं तब यह हमारे पैरों के नीचे होती है, मृत्यु के बाद वही मिटटी हमारे ऊपर होती है। यह विरोधाभास अहंकार और विनम्रता का प्रतीक है। (१७)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद ने धूल का एक रूपक के रूप में बेहद सूक्ष्मता से उपयोग किया है ताकि विनम्रता और स्वीकार्यता के महत्व को उजागर किया जा सके। अक्सर धूल को अशुद्ध और तुच्छ माना जाता है लेकिन वास्तव में यह हमारी समझ से कहीं अधिक ऊँची है। ज़िंदा रहते हुए हम उस पर बेरोक-टोक चलते हैं और उसके महत्व को नज़रअंदाज करते हैं। मगर मृत्यु के बाद हमें उसी धूल में रखा जाता है जो दर्शाता है कि हमारा अस्तित्व उसी दिव्य चेतना का अभिव्यक्त रूप है जिससे सारा सृजन

हुआ है। इस परस्पर जुड़ाव को समझकर हम कम आलोचनात्मक होते हैं, अधिक विनम्र बनते हैं और वर्तमान में जिए जाने की क्षमता प्राप्त करते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com